डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, नवम्बर, 2020
वर्षः 04, अंक–01

साफ–सफाई हमारी सांस्कृतिक दिनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा हैः डॉ0 अमिता 03

पुरस्कार खेलों को प्रोत्साहित करने का एक माध्यम हैः कुलपति 04

6,06,569 दीये एक साथ जला कर नया कीर्तिमान स्थापित

13 नवम्बर। दीपोत्सव–2020 के अवसर पर अयोध्या के राम की पैड़ी में डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के स्वयंसेवकों ने 6,06,569 दिए एक साथ जला कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। प्रभु राम के प्रति समर्पित दीपोत्सव के अवसर पर राम की पैड़ी भव्यता का प्रतीक बनकर उभरी। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड की टीम ने जैसे ही सर्वाधिक दीये जलाने के रिकॉर्ड की घोषणा की संपूर्ण सरयू तट करतल ध्वनि और जय श्रीराम के उद्घोष से गुंजायमान हो उठा। वर्ल्ड रिकॉर्ड की टीम ने डिजिटल प्रमाण पत्र प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को सौंपा।

राम की पैड़ी के 24 घाटों पर दीये सजाए जाने के बाद सायं काल 6 बजकर 10 मिनट पर राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अपने मंत्रिमंडल के सहयोगियों के साथ राम की पैड़ी पर बने मंच पर पहुंचे और दीप प्रज्ज्वलित करके रिकॉर्ड बनाने के लिए दीये जलाने के शुभारंभ का संकेत किया। संकेत प्राप्त होते ही डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के स्वयंसेवकों ने सतर्कता से अपनी कमान संभाल ली और आधे घंटे के अपने सक्रिय प्रयास में 24 घाटों पर सुसज्जित सभी दीयों को प्रज्ज्वलित कर राम की पैड़ी को रोशनी से सराबोर कर दिया। आधे घंटे की समय सीमा के पूरा होते ही स्वयंसेवको को घाट छोड़ने का आदेश दिया गया और उसके बाद काउंट–डाउन की घोषणा हुई। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड की टीम ने ड्रोन कैमरे की मदद से आधे घंटे में सभी जलते दियों की गिनती पूरी कर ली।

दीयों की गिनती शुरू होते ही राम की पैड़ी पर लेजर शो के जरिए राम कथा का प्रसारण किया गया। लेजर शो के अंत में प्रभु राम के अयोध्या धाम में लौटते ही कोल्ड पायरो की नेचर फ्रेडली वर्चुअल अद्भुत आतिशबाजी से राम की पैड़ी जगमग हो उठी और उपस्थित जनसमूह हर्षातिरेक से झूम उठा।

श्रीराम का जीवन कोरोना काल में सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैः राज्यपाल

दिव्य दीपोत्सव के अवसर पर रामकथा पार्क में आयोजित राम राज्याभिषेक समारोह को सम्बोधित करते हुए राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने कहा कि दिशाहीन होते जा रहे मानव मन और जीवन को गरिमामयी मार्गदर्शन की जरूरत है। संयमित व मर्यादित प्रभु श्रीराम का जीवन आज कोरोना काल में हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। कुलाधिपति ने कहा कि पल भर में सागर को सुखा देने का सामर्थ्य रखने वाले श्रीराम ने संयमित होकर ही सभी कार्य सम्पन्न किए।

प्रदूषण रहित दीपावली का अनुपम प्रमाण अयोध्या दीपोत्सव हैः मुख्यमंत्री

प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदूषण रहित दीपावली का अनुपम प्रमाण अयोध्या दीपोत्सव है। हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर प्रदूषण के प्रसार को रोकने के लिए आगे आना होगा। मुख्यमंत्री ने जन सामान्य से आग्रह करते हुए कहा कि अपनी विरासत एवं आध्यात्मिक परंपरा को जीवंत रखते हुए हमें हर्षोल्लास और उत्साह को बरकरार रखना है। मुख्यमंत्री ने सभी को दीपावली की शुभकामनाएं प्रदान की।

डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रवि शंकर सिंह ने राज्यपाल और कुलाधिपति एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री को आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि यह दीपोत्सव विश्वविद्यालय परिवार के लिए एक गौरवशाली उपलब्धि है। स्वयंसेवकों ने अपने सार्थक प्रयास से लगातार चौथे वर्ष गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बुक में कीर्तिमान स्थापित किया है।

दीपोत्सव के अवसर पर राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्रीमती आनंदीबेन पटेल और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा दिव्य दीपोत्सव पर विशेष डाक आवरण एवं विरूपण जारी किया गया। विशेष आवरण का विमोचन रामकथा पार्क में किया गया। विशेष आवरण भारतीय डाक विभाग एवं डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की ओर से जारी किया गया।

कार्यक्रम में उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, संस्कृति मंत्री डॉ0 नीलकंठ तिवारी, डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह, प्रदेश के भाजपा अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह, सांसद लल्लू सिंह, नगर विधायक वेद प्रकाश गुप्त, अयोध्या के महापौर ऋषिकेश उपाध्याय, मुख्य सचिव आर0 के0 तिवारी, अपर मुख्य सचिव अवनीश अवस्थी, प्रमुख सचिव नवनीत सहगल व मुकेश मेश्राम सहित जनपद के शीर्ष अधिकारियों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

सरदार पटेल के जीवन आदर्शों से हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिएः कुलपति

31 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में सरदार पटेल सेंटर फॉर नेशनल इन्टीग्रेशन द्वारा सरदार पटेल की जयंती पर संतकबीर सभागार में एक कार्यक्रम का आयोजन कोविड–19 के अनुपालन में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि सरदार पटेल के जीवन आदर्शो से हम सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए। यदि हम सभी में उनके जीवन आदर्शों से थोड़ा भी अपनाया तो जीवन के मूल्य बदल जाएंगे। कुलपति ने कहा कि वर्तमान समय में कथनी एवं करनी में अन्तर कम करने की कोशिश कर हम अपने में सुधार ला सकते हैं।

मुख्य अतिथि एस0पी0 ग्रामीण, अयोध्या के शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के जीवन एवं आदर्शों पर कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए कहा कि सरदार पटेल के योगदान को भारतवासी कभी भी भूल नहीं सकते। राष्ट्र के एकीकरण में सरदार पटेल ने चुनौतियों का डटकर मुकाबला किया। देशी रियासतों के एकीकरण में उनकी दृढ़ता और कटिबद्धता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। विशिष्ट अतिथि सिटी मजिस्ट्रेट, अयोध्या सत्य प्रकाश ने कहा कि सरदार पटेल अखण्ड भारत के निर्माता थे। उन्होंने राष्ट्रीय एकता को मूर्तरूप प्रदान किया। सभी भारतवासी सौभाग्यशाली है कि उन्हें विरासत के रूप में ऐसे महापुरूषों का आर्शीवाद प्राप्त है। जाति धर्म, सम्प्रदाय एवं रियासतों में विभक्त राज्यों को एकीकृत करने में सरदार पटेल ने सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया। इसी कारण सरदार पटेल को अखण्ड भारत का निर्माता भी कहा जाता है। कार्यक्रम के संयोजक सरदार पटेल सेंटर फॉर नेशनल इन्टीग्रेशन के समन्वयक प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि सरदार पटेल हम सभी के आदर्श है। उनके जीवन मूल्यों से हमें सीखना चाहिए।

कार्यक्रम में सरदार पटेल सेंटर फॉर नेशनल इन्टीग्रेशन द्वारा दिनांक 21 अक्टूबर, 2020 को कल्पना चावला सभागार में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। विजयी प्रतिभागियों को सरदार पटेल जयंती के अवसर पर कुलपति एवं मुख्य अतिथि द्वारा प्रशस्ति प्रमाण–पत्र एवं नगद धन–राशि प्रदान कर सम्मानित किया। निबंध प्रतियोगिता के जुनियर वर्ग में प्रथम पुरस्कार एश्वर्य पाण्डेय, द्वितीय वंश श्रीवास्तव एवं तृतीय पुरस्कार मृगेन्द्र राज पाण्डेय को मिला। इसी क्रम में दिपाली भार्गव को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। निबंध प्रतियोगिता सीनियर वर्ग में डाली पाण्डेय को प्रथम, विनीत कुमार पाण्डेय द्वितीय, काजल गुप्ता को तृतीय एवं निकिता गोस्वामी, शिवानी पाण्डेय, हर्षित कुशवाहा को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता जुनियर वर्ग में उत्कृष्ट यादव प्रथम, हिमांशु चौधरी द्वितीय, वर्षा सक्सेना तृतीय एवं आस्था कनौजिया, कीर्तिनिधि एवं खुशी को सांत्वना पुरस्कार नवाजा गया। पोस्टर प्रतियोगिता सीनियर वर्ग में अंजली यादव प्रथम, सुमित कुमार द्वितीय, अरीबा खान को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। सांत्वना पुरस्कार दीपिका भारती, मोनिका सिंह, राजेश कुमार मिला।

कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा एवं सरदार पटेल के चित्र पर पर माल्यार्पण करके किया गया। उसके उपरांत सरदार पटेल के जीवन एवं आदर्शों पर आधा–रित एक डाक्यूमेंट्री दिखाई गई। कार्यक्रम में राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता की शपथ कुलपति प्रो0 सिंह द्वारा दिलाई गई। कार्यक्रम का संच.ालन मनीषा यादव ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, प्रो0 एम0पी0 सिंह, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 अनुपमा श्रीवास्तव, प्रो0 एन0के0 तिवारी, प्रो0 जसंवत सिंह, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, प्रो0 आर0के0 सिंह, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, प्रो0 अनूप कुमार, डॉ0 अंशुमान पाठक, डॉ0 महेन्द्र पाल सिंह, राजीव कुमार सहित अन्य शिक्षक कर्मचारी एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रही।

मंथन

15 नवम्बर, 2020: कार्तिक, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, विक्रम संवत् 2077

''कठिनाइयों से लड़कर ही, कामयाबी हासिल होती है।''

राष्ट्रीय एकता के विकास में मीडिया की भूमिका

वर्तमान में मीडिया सभ्य समाज का दर्पण है। ज्ञान–विज्ञान, आशा–निराशा, संघर्ष–क्रांति, जय–पराजय, उत्थान–पतन, आदि जीवन की विविध भावभंगिमाओं की मनोहारी एवं यथार्थ छवि मीडिया के दर्पण में प्रतिबिम्बित होती है। समाचार पत्र, पत्रिकाओं, रेडियो, टी0वी0, मोबाइल, वेबसाइट्स आदि पर व्यापित यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसका जीवन से सीधा तथा गहराई के साथ जुड़ाव है। मीडिया का मूल लक्ष्य सर्वे भवन्तु सुखिनः.... के आदर्श पर समाज की स्थापना है। संस्कृति, सभ्यता और स्वतंत्रता की वाणी होने के साथ ही यह जन भावनाओं की अभिव्यक्ति और नैतिकता की पीठिका है। राष्ट्रीय एकता के लिए जिस मनोवैज्ञानिक और भौतिक वातावरण की जरूरत होती है, उसका निर्माण करने में मीडिया ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है। बहुआयामी संस्कृति और सामाजिक वैविध्यता की भारत जैसी मिसाल विश्व की किसी अन्य संस्कृति में दृष्टिगोचर नहीं होती है। वस्तुतः संस्कृति किसी राष्ट्र की नींव की सदृश्य होती है। संस्कृति उन गुणों का समुदाय है जो व्यक्तित्व को परिष्कृत और समृद्ध बनाती है। इस धरोहर को अक्षुण्य बनाए रखने के लिए नागरिकों में सामंजस्य बनाए रखना बहुत जरूरी है। किसी समूह, समाज या राष्ट्र के सामाजिक विकास में सूचनाओं एवं सम्प्रेषण के बेहतर प्रयोग से ही किसी अभियान की सफलता निर्धारित होती है। मीडियाविदों के साथ–साथ समाजशास्त्रियों और अर्थशास्त्रियों का भी विचार है कि भारत जैसे विशाल देश में मास–मीडिया विकास या सामाजिक सुधार सम्बंधित अभियान की गति एवं प्रक्रिया के लिए त्वरक का कार्य करता है। यह बात सर्वविदित है कि मीडिया जन–जन की बात जन–जन तक पहुंचाता है। वस्तुतः मीडिया मानवीय सम्प्रेषण की कला एवं विज्ञान का सम्मिश्रण है जो तेजी से किसी देश और उसके वासियों को किसी समस्या से मुक्ति दिलाकर एक गतिशील स्वस्थ एवं समृद्धि की स्थिति में लाता है, इस प्रकिया में भलीभांति जनशक्ति का सदुपयोग होता है और समाज में समरसता भी स्थापित होती है। मीडिया के उचित प्रयोग से जनजागरण करके समग्र राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लक्ष्य को सफलतापूर्वक कियान्वित किया जा सकता है। राष्ट्रीय एकता एवं सद्भाव का लक्ष्य सभी के लिए समर्पित है और इस लक्ष्य की प्राप्ति से सशक्त एवं सम्पन्न भारत का निर्माण किया जा सकता है।

सूचना एवं मनोरंजन का सशक्त माध्यम है टेलीविजन

टेलीविजन को विज्ञान का एक अद्भुत आविष्कार माना जाता है। टेलीविजन यानि दूरदर्शन, जन–जन का मनोरंजन करने वाला तथा देश–दुनिया की खबर बताने वाला यह उपकरण आज बहुत लोकप्रिय हो गया है। इससे हम सभी को हमेशा नई चीजें सीखने को मिलती है और दूर दूर की घटनाओं के बारे में जानकारी मिलती है।

टेलीविजन की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए पहला विश्व टेलीविजन फोरम 1996 में आयोजित किया गया था। इस आयोजन में माना गया कि समाज में टी0वी0 का रोल दिन–प्रतिदिन बढ़ रहा है। फोरम के बाद 1996 में ही दिसम्बर में संयुक्त राष्ट्र की महासभा में एक प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसमें 21 नवंबर को विश्व टेलीविजन दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया गया। यह फैसला वैश्विक सहयोग को बढ़ाने में टेलीविजन के योगदान को देखते हुए लिया गया था। सर्वविदित है कि संचार और सूचना प्रसार के लिए टेलीविजन मीडिया के सबसे प्रभाव–शाली रूपों में से एक है। इसका उपयोग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रसारित करने और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ाने के लिए किया जाता है।

भारत में टेलीविजन का पहला प्रसारण प्रायोगिक तौर पर दिल्ली में दूरदर्शन केन्द्र की स्थापना के साथ 15 सितम्बर 1959 को शुरू किया गया। बेहद सीमित कार्यक्रमों के बावजूद टेलीविजन के प्रति लोगों का लगाव बढ़ता गया और यह बहुत जल्द लोगों की आदत का अहम हिस्सा बन गया। दूरदर्शन का व्यापक प्रसार वर्ष 1982 में दिल्ली में हुए एशियाई खेलों के आयोजन के प्रसारण के बाद हुआ। टेलीविजन पर कार्यक्रमों का प्रसारण इसके केन्द्र से होता है। टेलीविजन पर कार्यक्रमों के प्रसारण में संचार उपग्रहों की मदद

ली जाती है। आजकल प्रसारण डिजिटल हो गए हैं जिससे दर्शकों को बेहतर गुणवत्ता के साथ कार्यक्रम देखने को मिलते हैं।

टेलीविजन के आविष्कार के बाद, बीते दशकों में इसका स्वरूप और तकनीक पूरी तरह बदल चुकी है। टेलीविजन आधुनिकता के साथ कदमताल करते हुए सूचना क्रान्ति का सबसे बड़ा हथियार है और हर घर की अहम जरूरत बन गया है। यह दुनिया की राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, खेल आदि गतिविधियों की सूचनाएं उपलब्ध कराने के अलावा मनोरंजन, शिक्षा तथा समाज से जुड़े मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करता है। यह समूचे विश्व के ज्ञान में वृद्धि करने में मदद करने वाला सशक्त जनमाध्यम है।

टेलीविजन प्रसारण के अनेक लाभ हैं तो कुछ हानियाँ भी हैं। यह लोगों को मनोरंजन की अधिकता के युग में ले गया है। अधिक टेलीविजन देखने से आँखों की तथा मानसिक परेशानियाँ उत्पन्न होती हैं। बैठे–बैठे घंटों टेलीविजन देखना शारीरिक थकान एवं सुस्ती को जन्म देता है। इसलिए किसी प्रकार की अति से बचकर लोगों को निर्धारित समय सीमा में ही टेलीविजन देखना चाहिए। अगर नकारात्मक पहलुओं की बात करें तो टेलीविजन के हिंसात्मक, अंधविश्वासों तथा डरावने कार्यक्रमों के कारण हमारे नैतिक मूल्य भी प्रभावित हो रहे हैं। लेकिन एक पक्ष यह भी है कि यह मनोरंजन और ज्ञान का सबसे बड़ा स्रोत बन चुका है और नवीनतम सूचनाएं प्रदान करते हुए समाज पर सकारात्मक प्रभाव भी डालता है। टेलीविजन की वजह से ज्ञान–विज्ञान, मनोरंजन, शिक्षा, चिकित्सा इत्यादि तमाम क्षेत्रों में बच्चों से लेकर बड़ों तक की सभी जिज्ञासाएं शान्त होती हैं।

सौरभ सिंह

टेलीविजन अब घर–घर की जरूरत है, अब हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं, जहाँ सूचना व संचार माध्यम दैनिक जीवन के अभिन्न अंग बन चुके हैं, इनके अभाव में जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

स्वतंत्र व उत्तरदायी पत्रकारिता को प्रतिबद्ध है प्रेस परिषद

पत्रकारिता अभिव्यक्ति का बेहद प्रभावी माध्यम है, वक्त के साथ इसकी पहुंच एवं शक्ति में विस्तार हुआ है। पत्रकारिता का मूल उद्देश्य जनरुचि के विषयों पर न्यायसंगत, यथार्थ तथा शालीन भाषा से जन–जन को सूचित एवं शिक्षित करना है, जिससे लोग घटनाओं, विचारों और समस्याओं से वस्तुनिष्ठ रुप से अवगत हों और समुचित रूप से कोई कदम उठा सके। मीडिया हमेशा से ही पीड़ित पक्ष के साथ खड़ा रहा है और दमन व शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद की है।

वर्तमान में मीडिया का प्रभाव इतना अधिक हो गया है कि इसी के द्वारा सत्ता के समीकरण साधे जाते हैं, लेकिन शक्तिशाली और सामर्थ्यवान मीडिया अपने विशेषाधिकार, कर्तव्य और दायित्व को अनदेखा नहीं कर सकता। इस परिप्रेक्ष्य में मीडियाकर्मियों के लिए जरूरी है कि वे औचित्य और वस्तुपरकता सुनिश्चित करने के लिए संयमित और सामाजिक रुप से स्वीकार्य भाषा का प्रयोग करें।

प्रेस की स्वतंत्रता का संरक्षण और बचाव ना केवल बाहरी हस्तक्षेप बल्कि आंतरिक रूप से भी करना होगा। संपादक के नाम पत्र, आंतरिक लोकपाल, इंडिया काउंसिल ऑफ पीयर्स और मीडिया वॉच ग्रुप ऐसी व्यवस्थाएं हैं जो मीडियाकर्मियों, पत्रकारों या प्रबंध तंत्र द्वारा की गई गलतियों को प्रकाश में लाती हैं। भारतीय प्रेस परिषद ने व्यावसायिक नीति एवं पत्रकारिता के मध्य, संतुलन का संवर्धन करके

डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा

समाचार माध्यमों में लोक विश्वास को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

स्वतंत्र और उत्तरदायी पत्रकारिता के लिए ही 1954 में प्रथम प्रेस आयोग का गठन किया गया। आयोग की संस्तुतियों के आधार पर भारतीय प्रेस परिषद की स्थापना की गई जो 16 नवंबर 1966 से कार्यशील हो गई। भारत में 16 नवंबर की तिथि उत्तरदायी और स्वतंत्र पत्रकारिता को अभिव्यक्त करता है, इसलिए 16 नवंबर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाने का निर्णय लिया गया। आजादी के 50 वर्ष पूरे होने पर 1997 से 16 नवंबर को प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय प्रेस दिवस का आयोजन किया जाता है, इस दिन प्रेस संस्थानों द्वारा सेमिनार, कॉन्फ्रेंस एवं विशेष व्याख्यान का आयोजन किया जाता है।

वर्तमान परिषद, प्रेस परिषद अधिनियम 1978 के अंतर्गत कार्य करती है। यह संवैधानिक अर्द्ध न्यायिक निकाय है जो कि प्रेस के हित प्रहरी के रूप में कार्य करती है। यह प्रेस की स्वतंत्रता के उल्लंघन और नीति के उल्लंघन पर शिकायतों पर निर्णय देती है।

परिषद का मुख्य लक्ष्य प्रेस की स्वतंत्रता एवं समाचार पत्र तथा एजेंसियों के स्तर को बनाए रखना और उनमें सुधार करना है।

जन–अभिव्यक्ति

ई–मासिक पत्रिका अवध अभिव्यक्ति से विश्वविद्यालय के क्रिया–कलापों का पता चलता है। सरदार पटेल, अब्दुल कलाम और संयुक्त राष्ट्र पर लेख ज्ञानवर्द्धक एवं रूचिपूर्ण रहे।

–रोशनी कुमारी

जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना, अँधेरा धरा पर कहीं रह न जाए...

दीपों का त्योहार दीपावली पर्व कार्तिक माह की अमावस्या की रात को मनाया जाता है। रात में दीपों का जगमगाना आकर्षण का केंद्र होता है। इस त्यौहार को मनाने के पीछे अलग–अलग कारण या कहानियां प्रख्यात है। हिंदू धर्म की मान्यता के अनुसार इस दिन भगवान राम 14 वर्ष का वनवास की अवधि पूर्ण करके तथा आसुरी शक्तियों का विनाश और रावण का संहार करके अयोध्या लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने संपूर्ण अयोध्या को दीपों से सजाया। तब से दीपावली का पर्व मनाया जाने लगा।

दीपावली पर्व को मनाने के पीछे एक और मत प्रचलित है, कुछ लोगों का कहना है कि इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया था। इस अत्याचारी राजा के संहार के बाद प्रजा ने खुशी से घी के दीप जलाए। एक और पौराणिक मान्यता के अनुसार कहा जाता है कि इसी दिन समुद्र मंथन से धन की देवी लक्ष्मी प्रकट हुई। जैन मान्यताओं के अनुसार 24 वें तीर्थंकर महावीर स्वामी को मोक्ष की प्राप्ति भी दीपावली को ही हुई। सिक्खों के लिए भी दीपावली महत्वपूर्ण है क्योंकि इस दिन ही अमृतसर में 1577 में स्वर्ण मंदिर का शिलान्यास हुआ था। इसके अलावा 1619 में दिवाली के दिन सिक्खों के छठें गुरु हरगोविंद सिंह को जेल से रिहा किया गया था। नेपाल में इस दिन को नए वर्ष के रूप में मनाते हैं।

दीपावली की तैयारियां कई दिन पहले से ही शुरू हो जाती है। लोग अपने घरों की साफ–सफाई करते हैं, रंगाई पुताई करते हैं और घरों को सजाया संवारा जाता है। कहा जाता है कि इस दिन गणेश लक्ष्मी पूजन से माता लक्ष्मी प्रसन्न होती है और गृहस्थों के घर निवास करती हैं। त्योहार का शुभारम्भ धन–तेरस से होता है। इस दिन लोग कुछ नया अवश्य खरीदते हैं और शुभ कार्यों का आरंभ करते हैं।

दीपावली के दिन घरों में सुंदर रंगोली बनाई जाती है। लोग दीप जलाने से पहले गणेश लक्ष्मी की पूजा करते हैं। घरों में तरह–तरह के पकवान बनाए जाते हैं मिठाईयां लाई जाती हैं। बच्चों में इस त्यौहार के लिए काफी उत्साह होता है उनके लिए नए–नए कपड़े लाए जाते हैं और पटाखे लाए जाते हैं। दीप जलाकर अंधकार को दूर किया जाता है। वस्तुतः यह त्योहार बुराई पर अच्छाई, अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान और निराशा पर आशा की विजय का प्रतीक है। यह पर्व समाज में उल्लास, भाईचारे व प्रेम का प्रतीक माना जाता है। पटाखों के जलाने से वायु में प्रदूषण की मात्रा काफी ज्यादा हो जाती है, इसलिए पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए ध्यान रखना चाहिए कि पटाखों का प्रयोग न करें।

राधा गोस्वामी

घरों में दीप जलाएं और दूसरों की मदद करने की कोशिश करें, साथ ही यह भी प्रयास करें कि गरीबों के घरों में भी दीप जले।

सुविचार

आप जो भी बीज बोयेंगे, उसका फल आपको देर सबेर जरूर मिलेगा।

–गुरु नानक देव

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह, कुलपति
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
रजनीश, सौरभ एवं साक्षी

Feedback

avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

साफ–सफाई हमारी सांस्कृतिक दिनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा है : डॉ0 अमिता

15 अक्टूबर । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में विश्व हाथ धुलाई दिवस पर सभी के लिए हाथ स्वच्छता विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि स्वच्छता हमारी सामाजिक एवं पारिवारिक परम्पराओं का अभिन्न अंग रहा है। पूर्वजों ने हाथ की सफाई को स्वास्थ्य के लिए अति आवश्यक बताया है। हमारा देश विश्व का पथप्रदर्शक रहा है और स्वच्छता में भी सदैव ही अग्रणी रहा है। कुलपति ने बताया कि सभी को स्वयं की स्वच्छता की जिम्मेदारी लेनी होगी, तभी स्वच्छ भारत का सपना पूरा हो सकेगा। कुलपति ने बताया कि कोविड–19 महामारी से बचाव के लिए यह सिद्ध हो चुका है कि जीवन में साफ–सफाई का कितना महत्व है? हाथों की सफाई के महत्व पर उन्होंने बताया कि मानवीय संरचना में हाथों का असाधारण महत्व है। यह महत्व केवल शारीरिक ही नहीं प्रतीकात्मक भी है। कुलपति प्रो0 सिंह ने एक रिपोर्ट का हवाला देते हुए बताया कि मनुष्य सामान्यतः अपने हाथों को प्रति घंटे में 45 से 50 बार अपने चेहरे पर ले जाता है इससे बचने की आवश्यकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को बराबर हाथ की धुलाई करते रहना चाहिए। कोविड से बचाव के लिए चिकित्सा विशेषज्ञ बार–बार हाथों की स्वच्छता को लेकर सचेत करते है। इस महामारी से बचाव का एक महत्वपूर्ण कदम स्वच्छता है। इसका अनुपालन करना चाहिए।

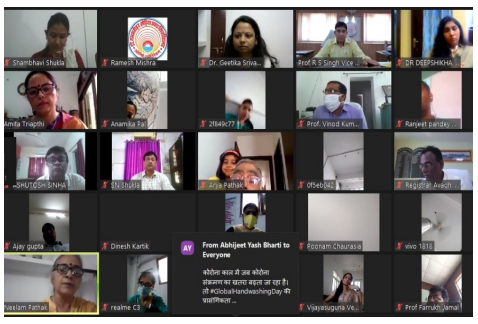

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता स्त्री रोग विशेषज्ञ, प्रयागराज की डॉ0 अमिता त्रिपाठी ने बताया कि साफ–सफाई हमारी सांस्कृतिक दिनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा है। आज के परिवेश में सफाई का कार्य और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। भारतीय परिवारों में बाल्यकाल से ही भोजन से पहले हाथ धोने की सीख दी जाती है। डॉ0 त्रिपाठी ने हाथ धुलाई दिवस पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसकी शुरूआत सन् 2008 स्वीडन से हुई थी, तभी से यह विश्व भर के लिए एक दिवस के रूप में आयोजित किया जाने लगा। इस महामारी के संदर्भ में चिकित्सा विशेषज्ञों ने भी यह माना है कि कोविड से बचाव के लिए नियमित अंतराल पर हाथों की सफाई आवश्यक है। हाथ से ही शरीर के अंगों पर संक्रमण का प्रसार होता है।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की चिकित्साधिकारी डॉ0 दीपशिखा ने बताया कि हाथों को धोने के लिए वैज्ञानिक तरीके ज्यादा प्रभावशाली है। बच्चों को भी हाथ धोने के लिए प्रोत्साहित करें। यह एक प्रभावशाली कदम है। अंगुलियों के पोरों की सफाई आवश्यक है। भोजन से पूर्व एवं उपरांत तथा दैनिक क्रिया के बाद हाथों की सफाई आवश्यक है। सेनेटाइजर का प्रयोग तत्कालिक रूप से प्रभावी है परन्तु अच्छे साबुन का प्रयोग एक बेहतर सफाई का विकल्प है।

अतिथियों का स्वागत करते हुए अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने स्वच्छता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि समाज के हर व्यक्ति को स्वयं से स्वच्छता का संकल्प लेना चाहिए। इससे अपने को एवं समाज को स्वस्थ रख पाएंगे। आज कोविड महामारी में स्वच्छता ही एक विकल्प है। इसे अगर अपने जीवन में अपना लिया जाए तो निश्चित ही हर प्रकार की बीमारी से निपट सकते हैं। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की वंदना एवं कुलगीत के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन शाम्भवी शुक्ला ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव ने किया। तकनीकी सहयोग रमेश मिश्र, पारितोष त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 एस0एन0 शुक्ल, प्रो0 जसवंत सिंह, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े।

मिशन शक्ति बालिकाओं को सुरक्षित वातावरण देगा : कुलपति

17 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में वीमेन ग्रीवेंस एण्ड वेलफेयर सेल द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा एवं सम्मान में मिशन शक्ति के तहत एक वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा एवं सर्वाधिकार के लिए शारदीय नवरात्र में मिशन शक्ति का शुभारम्भ किया है, जो निश्चित रूप से उन्हें सुरक्षित वातावरण देगा। इससे बालिकाओं एवं महिलाओं में आत्म सुरक्षा एवं सम्मान के साथ कर्तव्य बोध भी विकसित होगा, साथ ही अपराध कम होंगे। कुलपति ने कहा कि हमारे देश में महिलाएं हमेशा से पूज्यनीय रही है, लेकिन आज समाज में उनके खिलाफ अपराध बढ रहे हैं। अब समय आ गया है कि देवी दुर्गा की भांति महिलाएं समाज में व्याप्त महिषासुर का मर्दन करने में स्वयं समर्थ बने।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि काउंसलर फैमिली कोर्ट एवं सदस्य महिला यौन उत्पीड़न निवारण प्रकोष्ठ जनपद न्यायालय अयोध्या की डॉ0 मृदुला राय ने कहा कि समाज में महिलाओं के प्रति अपराध बढते जा रहे हैं। महिलाओं के खिलाफ अपराध हमारे देश के विकास को रोक रहे हैं। सरकार को कड़े कानून बनाने चाहिए। जो अपराधियों की सजा को तत्काल सुनिश्चित करें। फास्ट ट्रैक कोर्ट अधिक मात्रा में स्थापित किये जाने चाहिए।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि मिनिस्ट्री ऑफ होम अफेयर भारत सरकार के इंटेलिजेंस ब्यूरो के संयुक्त डिप्टी डायरेक्टर श्री एच0एस0 पाण्डेय ने कहा कि आज देश की आधी आबादी खतरे में है, नैतिक एवं सांस्कृतिक क्षय हो रहा है। इस देश में महिला देवी की तरह पूज्यनीय रही है, लेकिन आज यह धारणा लुप्त हो रही है। विदेशों में भी महिला अत्याचार बढ रहा है लेकिन वहां कानून अत्यन्त सख्त, पुलिस संवेदनशील न्याय प्रक्रिया त्वरित है। हमारे यहां इसमें काफी कठिनाई आती है। उन्होंने कहा कि महिलाओं के प्रति अपराध को रोकने के लिए एवं उनके सम्मान के लिए सरकार तमाम तरह की योजनाएं एवं कानून बना रही है। उसके बावजूद तमाम तरह की घटनाएं सुनने को मिलती है। हमें इस समस्या की जड़ पर प्रहार करने की आवश्यकता है। महिला अपराधों के खिलाफ जन आंदोलन की आवश्यकता है।

वीमेन ग्रीवेंस एण्ड वेलफेयर सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि मिशन शक्ति के माध्यम से महिलाओं में आत्मरक्षा का बोध होगा। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागियों को महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा एवं सम्मान में शपथ दिलाई। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की वंदना एवं कुलगीत की प्रस्तुति के साथ किया गया। तकनीकी सहयोग मनीषा यादव एवं राजीव कुमार ने प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 सिंधु सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 सरिता द्विवेदी द्वारा किया गया।

नवीन पाठ्यक्रमों के संचालन के लिए समन्वयकों एवं निदेशकों को सौपा गया दायित्व

05 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने परिसर में संचालित पाठ्यक्रमों एवं आगामी नवीन पाठ्यक्रमों के सुचारू रूप से संचालन के लिए परिसर के शिक्षकों को नये दायित्व सौंपे गए। इसमें प्रमुख रूप से एमबीए विभाग के प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा को सरदार पटेल सेंटर फॉर इंटीग्रेशन का समन्वयक बनाया गया है।

माइक्रोबायोलॉजी के प्रो0 शैलेन्द्र कुमार को सेंटर फॉर पापुलेशन एवं डिर्पाटमेंट ऑफ फूड टेक्नोलॉजी का समन्वयक एवं इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्टुकल साइंस के निदेशक प्रभार दिया गया है। प्रो0 एस0एस0 मिश्र को इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजूकेशन एण्ड यौगिक साइंस का निदेशक बनाया गया है। प्रो0 जसवंत सिंह इंस्टीट्यूट ऑफ अर्थ इन्वायरमेंट साइंस के निदेशक बने है। प्रो0 नीलम पाठक को फैकेल्टी ऑफ न्यूट्रीशन साइंस (एम, एमएससी होम साइस, पीजी डिप्लोमा इन न्यूट्रीशन एण्ड डाइट) को डीन इन्चार्ज एवं समन्वयक बनाया गया है।

प्रो0 चयन कुमार मिश्र को बॉटनी, केमेस्ट्री एवं जुलॉजी का समन्वयक बनाया गया है। बायोकमेस्ट्री की तुहिना वर्मा को सेंटर फार वुमेन स्टडीज का एवं डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव को डिपार्टमेंट ऑफ लैंग्वेज का समन्वयक बनाया गया है।

डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा को रीजनल लैंग्वेज के समन्वयक पद का दायित्व दिया गया है। जनसंचार एवं पत्रकारिता के डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी का समन्वयक का पद यथावत रखा गया है।

डॉ0 विनय कुमार मिश्र को समाज शास्त्र, प्रो0 अनूप कुमार को एप्लाइड साइकोलॉजी, डॉ0 अनिल कुमार बी0 फार्मा, डॉ0 सिंधु सिंह को डी0 फार्मा, डॉ0 ए0के0 राय को लॉ फाइव इयर इंटीग्रेटेड कोर्स, प्रो0 राजीव गौड़ को इंटीग्रेटेड बी0ए0–बी0एड0, बी0एस0सी0 बी0एड0 एवं बी0कॉम0–बी0एड0 पाठ्यक्रम का समन्वयक बनाया गया है।

रोजगार व प्रशिक्षण के लिए संस्थाओं के साथ एमओयू होगा

24 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के एम.बी.ए. विभाग द्वारा संचालित एम.बी.ए टूरिज्म मैनेजमेंट एवं एम.बी.ए. हास्पिटैलिटी मैनेजमेंट के छात्रों को उद्योग के मांग के अनुरूप आगामी सेमेस्टर में प्रशिक्षण कराने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही छात्रों को रोजगार एवं प्रशिक्षण के लिए विभिन्न संस्थाओं के साथ एम0ओ0यू0 भी कराया जायेगा। इसके हो जाने से विभाग के अध्ययनरत एवं उत्तीर्ण छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ रोजगार मुहैया कराने में सुविधा प्राप्त होगी।

इस सम्बन्ध में व्यवसाय प्रबन्ध एवं उद्यमिता के विभागाध्यक्ष प्रो0 अशोक शुक्ला ने बताया कि एम0बी0ए0 टूरिज्म मैनेज–मेंट एवं एम.बी.ए. हास्पिटैलिटी मैनेजमेंट के छात्र–छात्राओं को विभाग द्वारा देशव्यापी लॉकडाउन के समय वाईस ऑफ इण्डिया टूरिज्म एवं डीटार संस्था द्वारा ऑनलाइन समर ट्रेनिंग कराई गई थी। इसमें घरेलू पर्यटन, अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन, साहसिक पर्यटन, होटल उद्योग जगत के प्रमुख विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया था। संस्थाओं के प्रशिक्षण के दौरान विभाग के छात्रों को पावर प्वाइन्ट प्रजेन्टेशन बनाना सिखाया गया। छात्रों के उत्कृष्ट पावर प्वाइन्ट प्रजेन्टेशन के लिए संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा, जिसकी घोषणा शीघ्र की जायेगी।

विद्या परिषद और वित्त समिति की संस्तुतियों का किया गया अनुमोदन

22 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन में कोविड–19 के अनुपालन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह की अध्यक्षता में कार्यपरिषद की बैठक आहूत की गई।

बैठक में कुलसचिव उमानाथ ने परिषद के समक्ष कार्यसूची को कार्यवाही के लिए रखा। बैठक में गत दिनांक 20 जून, 2020 के कार्यवृत्त का अनुमोदन किया गया। परीक्षा समिति की बैठक दिनांक 8 जुलाई, 2020, 23 जुलाई, 2020, 18 अगस्त, 2020, 28 अगस्त, 2020 एवं 22 सितम्बर, 2020 में की गई संस्तुतियों का अनुमोदन किया गया। विद्या परिषद की बैठक में दिनांक 20 अक्टूबर, 2020 में की गई संस्तुतियों का भी अनुमोदन किया गया।

वित्त समिति की बैठक दिनांक 21 अक्टूबर, 2020 में की गई संस्तुतियों पर संशोधन के साथ अनुमोदन किया गया। बैठक में वित्त समिति द्वारा विश्वविद्यालय में नियमित पाठ्यक्रम में कार्यरत क्षिक्षकों की भांति स्ववित्त पोषित शिक्षकों को न्यूनतम डीए 660 दिए जाने की संस्तुति की गई। यह व्यवस्था आदेश जारी होने की तिथि से जारी होगी। अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान को सुचारू रूप से चलाने के लिए गठित बोर्ड ऑफ गवर्नेंस से परिषद को संसूचित किए जाने पर अनुमोदन प्रदान किया।

बैठक में उत्तर प्रदेश विश्वविद्यालय विकास संगठन सोसायटी की सदस्यता से परिषद को संसूचित किए जाने पर अनुमोदन प्रदान किया गया। विश्वविद्यालय के शिक्षक अनुमोदन की प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार की कमियों को विश्वविद्यालय स्तर से सुधार किए जाने पर विचार के लिए कुलपति प्रो0 सिंह को अधिकृत किया गया। कर्मचारी परिषद द्वारा प्रेषित पत्र दिनांक 17 अक्टूबर, 2020 के क्रम में लिपिक संवर्गीय नियमावली के अनुसार पदनाम एवं ग्रेड–पे का लाभ दिनांक 09 जनवरी, 2020 के स्थान पर 11 दिसम्बर, 2019 से लागू किए जाने हेतु कमेटी बनाई गई।

बैठक में वार्षिक सेमेस्टर परीक्षा सत्र 2019–20 सम्बन्धित संशोधित अध्यादेश से परिषद को संसूचित किया गया। बैठक में वित्त अधिकारी धनन्जय सिंह, डॉ0 जगदीश सिंह, प्रो0 अरविन्द कुमार मिश्र, प्रो0 ओम प्रकाश चौधरी, प्रो0 चयन कुमार मिश्र, डॉ0 अशोक कुमार राय, प्रो0 एम0पी0 सिंह, डॉ0 वंदना रंजन, डॉ0 नीलम यादव, प्रो0 गोपाल नाथ, डॉ0 के0 के0 सिंह, प्रो0 रविन्द्रनाथ खरवार एवं डॉ0 जगवीर सिंह उपस्थित रहे।

नवनिर्मित "राम वनजी सुतार मूर्ति कला भवन" का लोकार्पण

10 नवम्बर । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के ललित कला (फाइन आर्ट्स) विभाग आवासीय परिसर के नवनिर्मित "राम वनजी सुतार मूर्ति कला भवन" का पूजन एवं लोकार्पण विधिवत पूजन–अर्चन के साथ किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने फाइन आर्ट्स के छात्र–छात्राओं के द्वारा कलात्मक एवं चित्रण कार्यों की सराहना की और बताया कि निश्चित रूप से इन छात्र–छात्राओं के द्वारा विभिन्न स्वरूपों के निर्माण एवं कलाकृतियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन होता है। प्रसिद्ध मूर्तिकार श्री राम वनजी सुतार ने सुप्रसिद्ध मूर्तियों का निर्माण किया है, जिसमें गुजरात में सरदार पटेल की प्रतिमा, विदेशों में महात्मा गांधी की प्रतिमा, लखनऊ के विभिन्न पार्कों में निर्मित प्रतिमाएं तथा अयोध्या में प्रस्तावित भगवान श्रीराम की भव्य प्रतिमा प्रमुख हैं। ऐसे प्रसिद्ध मूर्तिकार के नाम पर भवन का लोकार्पण निश्चित रूप से छात्र–छात्राओं को अच्छी मूर्तियों के निर्माण एवं सृजन के लिए उत्प्रेरित करता रहेगा।

कार्यक्रम के संयोजक प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया की विश्वविद्यालय आवासीय परिसर में मूर्तिकला भवन की सौगात मिलने से निश्चित रूप से छात्र–छात्राओं में खुशी हैं तथा आने वाले समयं में इस भवन के माध्यम से शिक्षको एक छात्र–छात्राओं द्वारा बहु आयामी उत्कृष्ट मूर्तियों का निर्माण किया जायेगा। कार्यक्रम का संचालन सहायक आचार्य डॉ0 सरिता द्विवेदी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन विभाग की सहायक आचार्य पल्लवी सोनी द्वारा किया गया।

•डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने परिसर में संचालित स्ववित्तपोषित पाठ्यक्रमों के संचालन के सम्बन्ध में 19 अक्टूबर 2020 को विभा–गाध्यक्षों एवं समन्वयकों के साथ बैठक की।

• डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्व–विद्यालय के सम्बद्ध महाविद्यालयों की एम0एस0सी0–फाइनल के जूलॉजी, फिजिक्स, बॉटनी एवं डिफेन्स एण्ड स्टेटजिक स्टडीज विषयों की मुख्य परीक्षा वर्ष–2020 का परीक्षा परिणाम 04 नवम्बर, 2020 को घोषित किया गया।

•डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने महाविद्यालयों के शैक्षणिक सत्र नियमन एवं महाविद्यालय स्तर पर होने वाली समस्याओं पर प्रबन्धकों एवं प्राचार्यो के साथ 10 नवम्बर, 2020 को विचार–विमर्श किया।

पी–एच0डी0 प्रवेश परीक्षा सकुशल सम्पन्न

08 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पी–एच0डी0 सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीइटी–2020) सात केन्द्रों पर सम्पन्न हुई। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कोविड–19 के अनुपालन में विभिन्न केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया। जिसमें परिसर में स्थित प्रचेता एवं दीक्षा भवन सहित अन्य केन्द्रों की परीक्षा की शुचिता को पर खा। इसी कम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ ने भी विभिन्न केन्द्रों का निरीक्षण किया। पी–एच0डी0 सामान्य प्रवेश परीक्षा सुबह 10 से प्रारम्भ हुई जिसमें जनपद के 7 केन्द्रों पर कुल 3503 परी क्षार्थी पंजीकृत थे। इसमें 2434 परीक्षार्थियों ने प्रवेश परीक्षा दी।

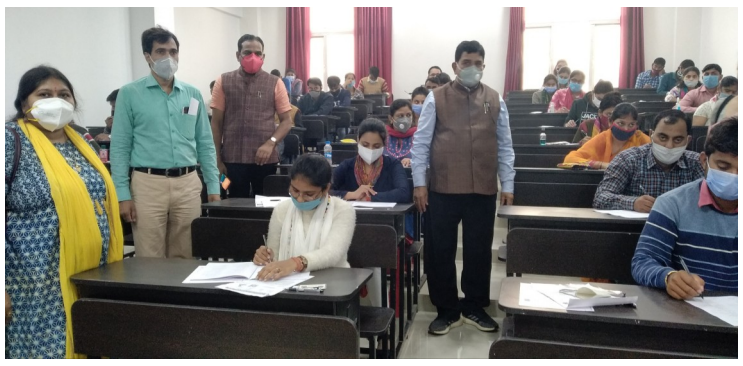

प्रवेश परीक्षा समन्वयक प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने बताया कि कुलपति के निर्देश पर जनपद के सात केन्द्रों पर कुल 27 विषयों की प्रवेश परी क्षा कोविड–19 के सुरक्षा उपायों के साथ सकुशल सम्पन्न हो गई। इस परीक्षा में कुल 16 पर्यवेक्षक विश्वविद्यालय द्वारा नियुक्त किए गए थे। इसके साथ ही दो सचल टीम भी बनाई गई थी जिन्होंने विभिन्न केन्द्रों का औचक निरीक्षण किया। कोई परीक्षार्थी अनुचित साधन का प्रयोग करते हुए पकड़ा नहीं गया। परीक्षा की पारदर्शिता को बनाये रखने के लिए प्रवेश–पत्र में आधार नम्बर भी जोड़ा गया था। बाहर के परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए प्रवेश पत्र पर क्यू आर कोड भी अंकित किया गया था। प्रो0 वर्मा ने बताया कि परीक्षा की शुचिता बनाये रखने के लिए प्रवेश के उपसमन्वयक डॉ0 नरेश चौधरी, डॉ0 नीलम यादव, डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव, डॉ0 अभिषेक सिंह, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 आशुतोष सिंह, प्रोग्रामर रवि मालवीय की विशेष भूमिका रही।

नई शिक्षा नीति के लिए योजना बनाने के निर्देश

03 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक सभागार में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने नई शिक्षा नीति–2020 के कियान्वयन के सम्बन्ध में संकायाध्यक्षों, अधिकारियों, विभागाध्यक्षों एवं समन्वयकों के साथ एक आवश्यक बैठक की। बैठक में कुलपति ने भारत सरकार द्वारा लागू की गई नई शिक्षा नीति के कियान्वयन के लिए सभी से चर्चा की एवं उनसे सुझाव मांगे। कुलपति ने बताया कि केन्द्र सरकार एवं प्रदेश सरकार नई शिक्षा नीति लागू कराने के लिए कृतसंकल्पित है। इसे प्रभावी बनाने के लिए वृहद कार्ययोजना पर कार्य करना होगा। बैठक में पाठ्यक्रम को नई शिक्षा नीति के अनुरूप बनाने पर चर्चा की गई। बैठक में परिसर के विभागों को संसाधनों से सुसज्जित किए जाने पर वृहद चर्चा की गई। कुलपति ने आवश्यक संसाधनों एवं सुविधाओं पर कार्य किये जाने के लिए निर्देश प्रदान किया। कुलपति ने बताया कि नई शिक्षा नीति में मातृ भाषा को अहम स्थान दिया गया है।

विश्व हाथ धुलाई दिवस पर ऑनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन

15 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में "विश्व हाथ धुलाई दिवस" के विषय पर ऑनलाइन पोस्टर, स्लोगन, कहानी एवं लेख प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया। निर्णायकों की उपस्थिति में प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए गए। अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने बताया कि विश्व हाथ धुलाई दिवस का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के दिशा–निर्देशन में आयोजित किया गया है। इस प्रतियोगिता के आयोजन का मुख्य उद्देश्य छात्र–छात्राओं के साथ–साथ जनमानस को जागरूक करना है। कोविड महामारी से उबरने एवं बचाव के लिए लोगों के बीच एक समन्वय स्थापित करने के साथ–साथ रचनात्मक विधाओं का सदुपयोग कर जागरूक करना भी है। हाथ की नियमित सफाई वायरस के संक्रमण से बचाव का एक मात्र विकल्प है।

पोस्टर प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की छात्रा अंजली यादव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर दिव्या वर्मा एवं तृतीय स्थान पर अरीबा खान रहीं। स्लोगन प्रतियोगिता में स्वाती श्रीवास्तव खरे प्रथम, द्वितीय स्थान हर्षित कुशवाहा एवं तृतीय स्थान पर राशि चौधरी रही। कहानी एवं लेख प्रतियोगिता में रमा पाण्डेय प्रथम स्थान पर रहीं। द्वितीय स्थान पर स्वाती श्रीवास्तव खरे एवं तृतीय स्थान पर निकिता गोस्वामी रहीं। पोस्टर प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में प्रो0 एस0एस0 मिश्र, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी एवं डॉ0 सरिता द्विवेदी रहीं। कहानी एवं लेख प्रतियोगिता निर्णायक मंडल में प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 अनूप कुमार, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा एवं डॉ0 शिवि श्रीवास्तव रहीं। स्लोगन प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में प्रो0 विनोद श्रीवास्तव, प्रो0 रमापति मिश्र, प्रो0 तुहिना वर्मा, डॉ0 पल्लवी सोनी रहीं। कार्यक्रम के आयोजन में डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव, डॉ0 अभिषेक कुमार सिंह, डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र, डॉ0 महेन्द्र पाल सिंह, शाम्भवी शुक्ला सहित अधिष्ठाता छात्र–कल्याण की पूरी टीम का विशेष सहयोग रहा।

कोशल संग्रहालय को मिली प्राचीन हनुमान की प्रतिमा

07 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कोशल संग्र–हालय को मध्य कालीन हनुमान की एक महत्वपूर्ण प्राचीन प्रतिमा प्राप्त हुई है। इस मूर्ति का आकार 157X60X30 सेमी0 है। बलुआ प्रस्तर से निर्मित यह प्रतिमा अयोध्या के स्वर्ग द्वार तीर्थ स्थित त्रेता के ठाकुर मन्दिर से मिली है। कलात्मक दृष्टि से यह प्रतिमा मन्दिर नुमा प्रस्तर खण्ड पर है। इसमें हनुमान के सिर पर मुकुट और कानों में कुडंल की संरचना उकेरी गई है। प्रतिमा के गले में कंठमाला एवं कटि भाग को स्पर्श करता हुआ यज्ञोपवीत निर्मित है। यह प्रतिमा 1670 ई0 की मानी जा रही है। इस प्रतिमा में करबद्ध मुद्रा के युगल हस्त खण्डित हो चुके है। इसकी भुजाओं पर बाजुबंद एवं कलाईयों में कंगन विद्यमान है। स्थनाक स्वरूप में बनी यह प्रतिमा आभूषणों से सुसज्जित है।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह द्वारा कोशल संग्रहालय का निरीक्षण किया गया और उन्होंने प्राप्त इस प्रतिमा को कोशल संग्रहालय की विशेष उपलब्धि बताया। इस अवसर पर उपस्थित कोशल संग्रहालय के समन्वयक प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने बताया कि संग्रहालय के विकास के लिए सर्वेक्षण, संरक्षण एवं प्रदर्शन का कार्य अनवरत रूप से किया जा रहा है। उन्हीं के मार्गदर्शन में संग्रहालय के वीथिका सहायक डॉ0 देशराज उपाध्याय द्वारा आयोजित सर्वेक्षण कार्यक्रम में इस प्रतिमा की जानकारी हुई और मन्दिर के महंत सुनील कुमार मिश्र ने मूर्ति को संरक्षण के लिए कोशल संग्रहालय को दान स्वरूप प्रदान किया।

पुरस्कार खेलों को प्रोत्साहित करने का एक माध्यम हैः कुलपति

23 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के क्रीड़ा विभाग आवासीय परिसर द्वारा अन्तर विभागीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता 2019 का पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह, स्वामी विवेकानन्द समागार में कोविड–19 के अनुपालन में आयोजित किया गया। समारोह में रन फॉर यूनिटी प्रतियोगिता 2019 का प्रथम पुरस्कार एमबीए विभाग के प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा को दिया गया। शारीरिक शिक्षा विभाग के देवेन्द्र वर्मा को द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार विश्वविद्यालय के जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग के डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी को मिला। कर्मचारियों में अरूण कुमार सिंह प्रथम, गिरीश चन्द्र पंत द्वितीय एवं धर्मराज तृतीय स्थान पर रहे। छात्राओं में अंजू चौहान ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। बीना द्वितीय तथा ऋचा खरे तृतीय स्थान पर रही। छात्रों में जितेन्द्र कुमार प्रथम, दिवाकर यादव द्वितीय और अनुज कुमार तृतीय स्थान पर रहे। पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह में कुलपति ब्रिगेड एवं कुलसचिव ब्रिगेड के प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया। अन्तर विभागीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता 2019 के विभिन्न खेलों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को भी पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि खेल टीम भावना को सिखाता है। जीवन में अनुशासित रहकर काफी कुछ प्राप्त किया जा सकता है। अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान रहेंगे तो देश, प्रदेश एवं समाज का विकास होगा। विश्वविद्यालय ने खेलों में गौरवपूर्ण प्रदर्शन किया है। अन्तरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अवध विश्वविद्यालय को सम्मानित किया गया है। पुरस्कार खेलों को प्रोत्साहित करने का एक माध्यम है। विश्वविद्यालय खेल के क्षेत्र में छात्र–छात्राओं के लिए सुविधाएं एवं प्लेटफार्म उपलब्ध कराएगा। कुलपति ने प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि खेल को खेल की भावना से खेलना चाहिए। हार जीत जीवन का हिस्सा है। जिन्हें पुरस्कार नहीं प्राप्त हुआ, वे निराश न हो। परिश्रम करें और जीवन में आगे बढ़े। परिसर में स्थित पदमश्री अरूणिमा सिन्हा भवन में विद्यार्थियों के लिए क्लाइम्बिंग वाल एवं जिम को खोल दिया जाएगा।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रशासनिक सुधार के विशेष सचिव एवं साईकिलिंग फेडरेशन ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष धीरेन्द्र कुमार संचान ने कहा कि कोरोना काल में स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही बिल्कुल न बरते। बीमारी से बचने के लिए व्यायाम एवं खेल अति आवश्यक है। खेल से दिमाग संतुलित रहता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। बड़े–बड़े खिलाड़ी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहते है। खिलाड़ियों में नकारात्मकता नहीं आनी चाहिए। प्रतिस्पर्धा को स्वीकार करने का जज्बा होना चाहिए। जिस देश में खेल विकसित है वह देश भी विकसित है। इम्युनिटी को बढ़ाने के लिए खेल एवं योग बहुत सहायक होते है। विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद अध्यक्ष प्रो0 जसवंत सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि क्रीड़ा परिषद समय–समय पर प्रतियोगिताएं आयोजित करता रहा है। यहां के छात्र–छात्राओं ने राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है। इस आपदा में स्वस्थ रहने के लिए खेल के माध्यम से इम्यून सिस्टम को सही रखा जा सकता है। अंत में उन्होंने विजेता एवं उपविजेता खिलाड़ियों को बधाई दी।

समारोह के पूर्व कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह एवं मुख्य अतिथि धीरेन्द्र सचान ने स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। उसके उपरांत समारोह का शुभारम्भ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। आवासीय परिसर के क्रीड़ा विभाग द्वारा गत वर्षों में खेल के क्षेत्र में किये गये कार्यों पर डाक्यूमेंट्री दिखाई गई। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 आशीष पटेल एवं डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी ने किया। अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन क्रीड़ा प्रभारी आवासीय परिसर डॉ0 मुकेश वर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर कुलसचिव उमानाथ, मुख्य नियंता अजय प्रताप सिंह, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह, प्रो0 के0 के0 वर्मा, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 अनूप कुमार,, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार,, डॉ0 अभिषेक सिंह, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 आर0एन0 पाण्डेय, राजेश पांडेय, गिरीशचन्द्र पंत, सरेन्द्र प्रसाद सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं प्रतिभागी उपस्थित रहे।

स्वैच्छिक श्रमदान में अधिकारी, शिक्षक एवं कर्मचारियों ने बढ़चढ कर लिया हिस्सा

07 नवम्बर । डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के नेतृत्व में, प्रत्येक शनिवार की भांति प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक स्वैच्छिक श्रमदान एवं साफ–सफाई अभियान जारी रहा। इस अभियान में विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षकगण एवं कर्मचारियों ने बढ़चढ कर हिस्सा लिया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने सर्वप्रथम कौटिल्य प्रशासनिक भवन एवं पद्मश्री अरूणिमा भवन के सामने झाड़ू लगाकर श्रमदान किया।

अभियान को आगे बढ़ाते हुए कुलपति प्रो0 सिंह ने शिक्षकों द्वारा किए जा रहे श्रमदान को प्रोत्साहित करने के लिए स्वच्छता प्रभारी डॉ0 विनोद चौधरी को कुछ स्थलों की सघन सफाई के लिए निर्देशित किया। प्रचेता भवन में स्थित जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, हिन्दी, यौगिक साइंस एवं सिन्धी विषयों के शिक्षक स्वैच्छिक श्रमदान करते हुए दिखाई दिए। कुलपति ने आचार्य नरेन्द्र महिला छात्रावास में भी साफ–सफाई का मौके पर जाकर निरीक्षण किया। परिसर के स्वास्थ्य केन्द्र का निरीक्षण कर चिकित्सा–धिकारी डॉ0 दीपशिखा चौधरी से परिसर में साफ–सफाई की जानकारी प्राप्त की। एम0बी0ए0 विभाग के सामने प्रो0 हिमांशु शेखर सिंह एवं प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा के नेतृत्व में शिक्षकों ने श्रमदान किया। आई0ई0टी0 में भी कुलपति ने साफ–सफाई को परखने के लिए शैक्षिक ब्लाक का सघन निरीक्षण किया। केन्द्रीय पुस्तकालय, श्रीराम शोध–पीठ, भौतिकी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स, विधि, बायोकमेस्ट्री, माइक्रोबायोलॉजी, अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास, प्रौढ सतत् एवं प्रसार शिक्षा, पर्यावरण विज्ञान, इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व, गणित एवं सांख्यिकी एवं पर्यटन विभागों में शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने श्रमदान कर साफ–सफाई की।